International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal www.ijarst.in
ISSN: 2457-0362

कबीर दास जी की काव्य भाषा के मूल स्त्रोतों में प्रेम प्रासंगिता का अध्ययन

पूजा गोस्वामी
शोधार्थी, ग्लोकल यूनिवर्सिटी, सहारनपुर उत्तर प्रदेश

डॉ.नवनीता भाटिया
एसोसिएट प्रोफेसर, ग्लोकल यूनिवर्सिटी, सहारनपुर उत्तर प्रदेश

सारांश:

हिंदी साहित्य के इतिहास में 'कबीर' का व्यक्तित्व अनोखा है। भक्तिकाल के वे पहले ऐसे संत है, जिन्हें पूर्ण भक्ति का दर्जा प्राप्त है| "कविता करना उनका लक्ष्य नहीं था| उनका लक्ष्य भगवत भक्ति था, और उस सिलसिले में उन्होंने जो कुछ कहा या लिखा यदि उसमे कविता है, तो जैसा कि आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का कहना है, वह घलुए में मिली वस्तु है|" इस प्रकार कबीर मुलत: भक्ति है| कबीर की भक्ति के केंद्र में प्रेम है| इस भक्ति के लिए पुरुषोत्तम अग्रवाल ने लिखा है, कि "भक्ति" शब्द मूलत: अनुराग और भागीदारी का आशय लेकर ही आया था| इस मूल आशय में समर्पण सत्ता के भय से उत्पन्न नहीं, प्रेम और अनुराग का ही समर्पण है| भक्त पराजित सैनिक की तरह समर्पण करने वाले को नहीं बराबरी के प्रेम में समर्पण करने वाले को कहा जाता था| यह बात यास्क के निरुक्त और भागीदारी कहने को रह गई, नतमस्तक समर्पण को ही भक्ति मान और मनवा लिया गया| नामदेव, रामानंद और कबीर का महत्व इसबात में है, कि वे समानसत्ता और धर्मसत्ता द्वारा भक्ति पर चढ़ा दिए गए आवरण को हटाकर इसके मूल आशय भागीदारी को वापस लाते है|

मुख्य शब्द: कबीर, काव्य भाषा, प्रेम प्रासंगिता, भक्तिकाल, हिंदी साहित्य

प्रस्तावना:

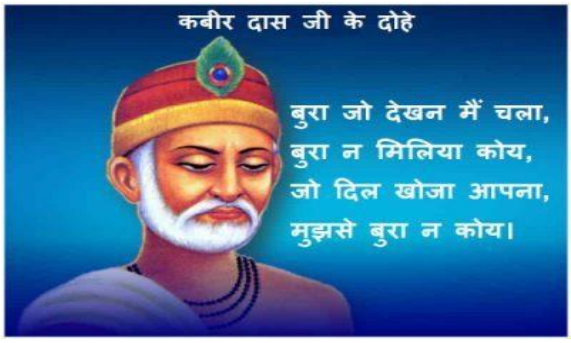

कबीर पंद्रहवीं शताब्दी के संत थे, भक्तिकाल के कवियों मे वह प्रमुख रहस्यवादी कवि थे, उनके दोहे सुनने वाले लिख लेते थे या कंठस्त कर लेते थे क्योंकि कबीर अनपढ़ थे, पर ज्ञान का भंडार थे। उन्होने ख़ुद कहा कि ''मसि कागज़ गह्यो नहीं, कलम नहीं छुओ हाथ।''

सिख धर्म पर उनका प्रभाव स्पष्ट झलकता है।उनका पालन पोषण एक मुस्लिम जुलाहा परिवार मे हुआ था पर उन्होने अपना गुरू रामानंद को माना। जन्म स्थान के बारे में विद्वानों में मतभेद है परन्तु अधिकतर विद्वान इनका जन्म काशी में ही मानते हैं,जिसकी पुष्टि स्वयं कबीर का यह

International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal www.ijarst.in
ISSN: 2457-0362

कथन भी करता है "काशी में परगट भये ,रामानंद चेताये "

हिन्दू कहें मोहि राम पियारा, तुर्क कहें रहमाना,

आपस में दोउ लड़ी-लड़ी मुए, मरम न कोउ जाना।

आज जब पूरे विश्वमे धर्म के नाम पर आतंकवाद फैला हुआ है तब कबीर के दोहों को याद करना उन्हे जीवन मे उतारना बहुत प्रासंगिक लगता है। वे एक ही ईश्वर को मानते थे और कर्मकाँडों के घोर विरोधी थे। अवतार, मूर्त्ति, रोज़ा, ईद, मसजिद, मंदिर आदि को वे नहीं मानतेथे।कबीर के समय मे हिंदू जनता पर धर्मातंरण का दबाव था उन्होने अपने दोहों मे दोनो धर्मो के कर्मकाँडों का विरोध किया और ईश्वर केवल एक है इस बात को तरह तरह से लोगों को सहज भाषा मे समझाया।उन्होने ज्ञान से ज़्यादा महत्व प्रेम को दिया।–

पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ,
पंडित भया न कोय,

ढाई आखर प्रेम का, पढ़े
सो पंडित होय।

निम्नलिखित दोनो दो हों मे कबीर ने हिन्दू और इस्लाम दोनो धर्मोंके खोखलेपन को बताया है।मूर्ति पूजा को निरर्थक मानते हुए वो कहते हैं कि इससे अच्छी तो चक्की है, कि कुछ काम तो आती है।मुल्ला के बांग लगाने का भी वह उपहास करते हैं।ये दोहे आज इसिलिये बहुत प्रांसंगिक हो गये हैं क्योंकि आज धर्मों मे दिखावा बढ़ता जा रहा है,एक दूसरे कोनीचा दिखाने की होड सी लगी हई है।

पाहन पूजे हरि मिलैं, तो मैं पूजौं पहार।

वाते तो चाकी भली, पीसी खाय संसार।

कांकर पाथर जोड़िके मस्जिद ली बनाय

ता चढ़ मुल्ला बांग दे क्या बहरा हुआ ख़ुदाय

कबीर को शांतिमय जीवन प्रिय था और वे अहिंसा, सत्य, सदाचार आदि गुणों के प्रशंसकथे।वो पराये दोष देखने से पहले अपने दोष देखने की बात कहते थे।–

दोस पराए देखि करि, चला हसन्त हसन्त,

अपने याद न आवई, जिनका आदि न अंत।

ये दोहा आज के संदर्भ मे बहुत प्रसंगिक है।राजनैतिक दलों पर ये बहुतसटीक बैठता है, जब कोई नेता विरोधी दल की किसी बुराई की ओर इंगित करता है सामनेवालाआरोप का उत्तर न देकर आरोप लगाने वाले कटघरे मे खड़ा कर देता है।स्वस्थ आलोचना कोई स्वीकार नहीं करता, जबकि स्वस्थ आलोचना का बहुत लाभ है।–

निंदक नियरे राखिए, आँगन कुटी छवाय,

International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal www.ijarst.in
ISSN: 2457-0362

बिन पानी, साबुन बिना, निर्मल करे सुभाय।

इसी तरह आरोप प्रत्यारोप लगते रहते हैं और लोग अमर्यादित भाषा बोलने लगते हैं किसी भी सभ्य समाज मे अमर्यादत भाषा और अभद्र शब्दों का प्रयोग नहीं होना चाहिये किसी भी वजहसे वाणी मे कटुता नहीं आनी चाहिये। आज हर तरफ़ नफ़रत का महौल है, क्रोध है, जिस वजह से व्यक्ति अपना संतुलन खोता जा रहा है और किसी के लिये भी कड़वे व अभद्र बोल बोल देता है।हरेक से मृदु वाणी बोलने से व्यक्ति ख़ुद भी शाँत रहता है और सुनने वाले भी शाँत हो जाते हैं।–

ऐसी बानी बोलिये ,मन का आपा खोय,

औरन को सीतल करे आपहुं सीतल होय।

व्यर्थ की बातों मे बहस मे क्रियाकलापों मे आज हरेक इतना समय बरबाद कर देताहै। साधु यानि अच्छे लोगों को मुख्य बातों पर ही ध्यान देना चाहिये इस बात को सूप के माध्यम से कबीर ने बहुत सुन्दर तरीके से सझाया था।–

साधु ऐसा चाहिए, जैसा सूप सुभाय,

सार-सार को गहि रहै, थोथा देई उड़ाय।

आज संचार के युग मे यह दोहा बहुत प्रासंगिक है।–

बोली एक अनमोल है, जो कोई बोलै जानि,

हिये तराजू तौलि के, तब मुख बाहर आनि।

काव्य भाषा में प्रेम प्रासंगिता

कबीर अपने समय के क्रान्तिकारी प्रवक्ता थे। उन्होंने आडम्बरों, कुरीतियों, जडता, मूढता एवं अंधविश्वासों का तर्कपूर्ण खण्डन किया। कबीर का अपने युग के प्रति यथार्थ बोध इतना था कि उन्होंने हर एक परम्परा, रूढ, कुरीति तथा पाखण्ड को यथार्थ के धरातल पर खारिज किया। अबुलफजल ने आइने अकबरी में लिखा है कि ''कबीर ने समाज के सडे-गले रीति रिवाजों को नकार दिया। कबीर ने समाज सुधार के लिए कोडे खाए तो व्यंग्य तथा हँसी-ठिठौली द्वारा भी जनमानस में सुधार के प्रति सोच विकसित की।'' उन्होंने आलोचना के साथ सृजन की रूपरेखा रखी। कबीर अराजकता, सामन्तवाद तथा उथल-पुथल के दौर में क्रान्तिकारी स्वप्नकार हैं। वे स्वभाव से संत थे, लेकिन प्रकृति से उपदेशक। उन्होंने अंधविश्वासों का उपहास कर ठीक निशाने पर चोट पहुँचाई। उन्होंने मूर्तिपूजा, तीर्थयात्र, अवतारवाद एवं

International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal www.ijarst.in
ISSN: 2457-0362

कर्मकाण्डों का विरोध किया तथा ईश्वर और व्यक्ति के बीच किसी भी मध्यस्थ को अस्वीकार किया। उन्होंने हर रूढ को खारिज किया जो मानव-मानव में भेद कराती थी। आज के दौर में जब भौतिक साधनों हेतु भ्रष्टाचार, लूट- खसौट, मिलावटखोरी जैसे अपराध मानवता को झकझोर रहे हैं तब कबीर के ये विचार अति प्रासंगिक हैं –

सांई इतना दीजिए, जामे कुटुम्ब समाय ।

मैं भी भूखा न रहूँ, साधु ना भूखा जाये ।।

अर्थात् कबीर संग्रहवाद के बजाय अपरिग्रह को महत्त्व देते हैं। रामानन्द के शिष्य कबीर ने धार्मिक आडम्बरों के विरुद्ध आवाज उठाई और कहा कि –

कांकर पत्थर जोरि के मस्जिद लई बनाय ।

ता ऊपर मुल्ला बांग दे क्या बहरा हुआ खुदाय ।।

कबीर की उलटबाँसिया पग-पग पर मानव को अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाती हैं, वे हर उस व्यवस्था का विरोध करते हैं जो मानव को अवनति की जंजीरों में जकडती है तथा उसे रसातल में ले जाती है।

कबीर ने मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा स्थापित की। उन्होंने धैर्य, सहिष्णुता, कर्मयोग, गुरु का सम्मान, प्रेम, मानवता, आत्मा की पवित्रता, दीन-दुखियों की सेवा, नैतिकता के पालन को मानवीय कर्त्तव्य माना। कबीर ने 'माली सींचे सौ घडा' के माध्यम से धैर्य के साथ कर्म को महत्त्व दिया। उन्होंने 'भृगु मारी लात' द्वारा क्षमा के महत्त्व तथा 'माटी कहे कुम्हार से' द्वारा सहिष्णुता का पाठ पढाया। कबीर सच्चे अर्थों में कर्मयोगी थे। उन्होंने समाज को सचेत किया कि निर्बल को मत सताओ नहीं तो उसकी हाय से सब कुछ नष्ट हो जायेगा –

निर्बल को न सताइये जाकी मोटी हाय ।

मुई खाल की श्वांस सौं लौह भसम हो जाय ।।

उन्होंने पलायन न करके समाज के बीच में रहकर गृहस्थ के रूप में कर्मयोगी बनकर समाज को शिक्षित किया। उन्होंने जुलाहा कर्म को अपनाकर सभी के समक्ष आदर्श रखा कि कोई भी व्यवसाय हीन नहीं है अर्थात् कर्म की महानता के वे साक्षात् प्रतीक थे। उन्होंने जीवन में कथनी और करनी की समानता को महत्त्वपूर्ण माना। वे दुःखी मानव की पीडा को स्वयं भोग रहे थे –

चलती चक्की देखकर दिया कबीरा रोए ।

दुई पाटन के बीच में साबुत बचा न कोए ।।

कबीर अनपढ थे, लेकिन वे लकीर के फकीर नहीं थे। वे यथार्थ जीवन के विद्वान् थे। वे कहते हैं –

मसिकागद छूयो नहीं, कलम गही नहिं हाथ ।

चारिउ जुगन महातम् कबीर, मुखहि जनाई बात ।।

उन्होंने शिक्षा प्रणाली को पोथियों से बाहर लाकर प्रेम तथा यथार्थ पर आधारित किया –

पोथी पढ-पढ जग मुआ, पंडित भया न कोय ।

ढाई आखर प्रेम का, पढै सौ पंडित होय ।।

उन्होंने कर्म तथा स्वावलम्बन की शिक्षा दी। कबीर वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा तर्कबुद्धि को सच्ची शिक्षा मानते थे। उनके यथार्थवाद पर हजारी

International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal www.ijarst.in
ISSN: 2457-0362

प्रसाद द्विवेदी लिखते हैं, ''कबीर ने कविता के लिए कविता नहीं लिखी, वह अपने आप हो गयी।'' कबीर ने जनभाषा में जनता को शिक्षित किया। उनकी सधुक्कडी भाषा एक ओर मातृभाषा में विद्यार्थी को शिक्षित करने के लिए प्रेरित करती है, वहीं दूसरी ओर भाषायी पाण्डित्य, परायी भाषा में अपने लोगों से बात करना तथा भाषा के नाम पर विवाद पैदा करना आदि प्रवृत्तियों पर प्रश्नचिह्न लगाती है। आज 21वीं सदी के विश्व में भारत जहाँ अपनी पहचान स्थापित करना चाहता है, वहाँ स्थानीय समस्याएँ, नक्सलवाद, जातिवाद, क्षेत्रवाद, भाषावाद, सम्प्रदायवाद के दौर में एक 'समग्र भारतीय व्यक्तित्व' के रूप में कबीर हमारे व्योम में जाज्वल्यमान नक्षत्र् हैं। डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कबीर के लिए लिखा है, ''वे मुसलमान नहीं थे। हिन्दू होकर भी हिन्दू नहीं थे। वैष्णव होकर भी वे वैष्णव नहीं थे। योगी होकर भी योगी नहीं थे। वे भगवान् के नरसिंहावतार की मानव प्रतिमूर्ति थे। नरसिंह की भाँति वे असम्भव समझी जाने वाली परिस्थितियों के मिलन बिन्दु पर अवतरित हुए थे, जहाँ एक ओर ज्ञान निकल जाता है और दूसरी ओर भक्ति मार्ग।'' अकबर के दरबारी उर्फी ने उनके बारे में कहा है, ''ऐसे रहो अच्छे और बुरों के साथ, ओ ! उर्फी, कि जब तुम्हें मौत आए, मुसलमान तुम्हारे शव को पाक पानी से नहलाये और हिन्दू उसका अग्नि संस्कार करें।''

यह कबीर का ही युग बोध है कि वे बीच बाजार में हाथ में जलता हुआ मुराडा लिये खडे हैं और सत्य की खोज में समाज के अग्रदूत बने हैं –

हम घर जारा आपना, लिए मुराडा हाथि ।

अब घर जालौ तास का, जो चलै हमारे साथी ।।

भारतीय परम्परा में वे आज जुझारू प्रेरणा के प्रतीक हैं एवं मानवता तथा भारतीयता के सच्चे पोषक हैं।

कबीर की प्रासंगिकता

आजकल राजनैतिक दलों के नेता हों या अभिनेता बिना सोचे समझे बयानबाज़ी कर देते हैं संचार के युग मे बात कहीं से कहीं तुरन्त पंहुच जाती फिर वो सफ़ाई देते रहते हैं कि उनका ये मतलब नहीं था, वो मतलब नहीं था, बात को संदर्भ सेअलग करके तोड़ मोड़ के पेश किया गया।उनके वकतव्य का मक़सद किसी की भावनाओं को ठेस पहुंचाना नहीं था।इसलिये कबीर ने कहा था कि बहुत सोच समझ कर मुंह से बात निकालनी चहिये।

जाति न पूछो साधु की,
पूछ लीजिये ज्ञान,

मोल करो तरवार का,
पड़ा रहन दो म्यान।

कबीर जाति प्रथा को नहीं स्वीकार करते थे,उपर्युक्त दोहे मे उन्होंने स्पष्ट किया है कि साधु यानि गुणी लोगोंकी जाति नहीं पूछनी चाहिये उनके केवल गुण देखने चाहिये।आज जातिवाद का जो ज़हर समाज मे फैला है, कभी किसी जाति को आरक्षण चाहिये कभी किसी को,उनको कबीर का ये दोहा करारा जवाब है।

जीवन मे संतुलन का महत्व समझाते हुए कबीर कहते हैं अधिकता किसी भी चीज़ की सही नहीं है।

अति का भला न बोलना,
अति की भली न चूप,

International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal www.ijarst.in
ISSN: 2457-0362

अति का भला न बरसना,
अति की भली न धूप।

किसी का ओहदे या आकर मे छोटा बड़ा होना महत्वपूण नहीं है,महत्वपूर्ण उसकी उपयोगिता है। निम्नलखित दोनो दोहे यही प्रमाणित करते हैं।-

बड़ा हुआ तो क्या हुआ जैसे पेड़ खजूर,

पंथी को छाया नहीं फल लगे अति दूर।

तिनका कबहुँ ना निन्दिये, जो पाँवन तर होय,

कबहुँ उड़ी आँखिन पड़े, तो पीर घनेरी होय।

आजकल धन दौलत ऐशो आराम के साधनो की दौड़ मे व्यक्ति सही ग़लत का अंतर भूल चुका है इसलिये भ्रष्टाचार, चोरी डकैती तथा दूसरे अपराध बढ़ रहे हैं। कबीर धन का महत्व मानते हैं पर बस इतना सा-

साईं इतना दीजिये, जा में कुटुम समाय,

मैं भी भूखा ना रहूँ, साधू ना भूखा जाय।

लालच काअंत ऐसा भी होता है-

मक्खी गुड में गडी रहे, पंख रहे लिपटाये,

हाथ मले और सिर ढूंढे, लालच बुरी बलाये।

संतोष का अर्थ समझाने के लिये वो लिखते हैं-

चाह मिटी, चिंता मिटी, मनवा बेपरवाह,

जिसको कुछ नहीं चाहिए वह शहनशाह।

महत्वाकाँक्षी होना ग़लत नहीं है पर उसके लियेएक अंधी दौड़ मे लगकर अपना सुख चैन गंवाना सही नहीं है क्यों कि सब काम अपने समय से ही होते हैं। आज का व्यक्ति सब कुछ बहुत जल्दी पाना चाहता है पर सब काम अपने समय पर ही होते हैं-

धीरे-धीरे रे मना, धीरे सब कुछ होय,

माली सींचे सौ घड़ा, ऋतु आए फल होय।

कबीर के राम तो अगम हैं और संसार के कण-कण में विराजते हैं। कबीर के राम इस्लाम के एकेश्वरवादी, एकसत्तावादी खुदा भी नहीं हैं। इस्लाम में खुदा या अल्लाह को समस्त जगत एवं जीवों से भिन्न एवं परम समर्थ माना जाता है। पर कबीर के राम परम समर्थ भले हों, लेकिन समस्त जीवों और जगत से भिन्न तो कदापि नहीं हैं। बल्कि इसके विपरीत वे तो सबमें व्याप्त रहने वाले रमता राम हैं। वह कहते हैं

व्यापक ब्रह्म सबनिमैं एकै, को पंडित को जोगी।
रावण-राव कवनसूं कवन वेद को रोगी।

कबीर की दृढ़ मान्यता थी कि कर्मों के अनुसार ही गति मिलती है स्थान विशेष के कारण नहीं। अपनी इस मान्यता को सिद्ध करने के लिए अंत समय में वह मगहर चले गए ;क्योंकि लोगों मान्यता थी कि काशी में मरने पर स्वर्ग और मगहर में मरने पर नरक मिलता है।

कबीर की हर बाते आज उतनी ही प्रासंगिक है जितनी उनके समय मे थी।आजकल धार्मिक

International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal www.ijarst.in
ISSN: 2457-0362

कर्मकाँडों को बहुत ही विकृत रूप समाज मे दिख रहा है। राजनैतिक लाभ के लिये धार्मिक भावानाओं उकसाया जाता है। ऐसे मे कबीर को पढ़ना समझना और जीवन मे उतारना साँप्रदायिक सद्भाव बनाये रखने मे मदद कर सकता है।

उपसंहार:

कबीर मुलता: भक्त थे, पर इस भक्ति साधना में उन्होंने जी कुछ कहा उस कथन के लिए उन्होंने जो भाषा प्रयोग की वह कविता की कसौटी पर उच्च कोटि की है| उन्होंने अनजाने में ही कविता के उच्च शिखर को छू लिया है| आचार्य हजारी प्रसाद द्वेवेदी लिखते है कि "हिंदी साहित्य के हजार वर्षो के इतिहास में कबीर जैसा व्यक्तित्व लेकर कोई लेखन उत्पन्न नहीं हुआ|" कबीर को हिंदी साहित्य का अद्वितीय व्यक्ति बना दिया है| कबीर की वाणी का अनुकरण नहीं हो सकता| अनुकरण करने की सभी चेष्टायें व्यर्थ सिद्ध हुई है| इसी व्यक्तित्व के कारण कबीर की उक्तियाँ क्षोता को बलपूर्वक आकृष्ट करती है| इसी व्यक्तित्व के आकर्षण को समालोचक संभाल नहीं पाता और खीझकर कबीर को कवि कहने में संतोष मिलता है|

संदर्भ सूची-

1.कबीर-साहित्य और सिद्धान्त: यज्ञदत्त शर्मा, अक्षराम् प्रकाशन सोनीपत, पृ. 22

2.वही, पृ. 126

3.कबीर ग्रंथावली: कमलापति पांडेय, पृ. 430

4.कबीर: हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, पृ. 145

5.हिन्दी साहित्य का इतिहास: आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, कमल प्रकाशन नई दिल्ली, पृ. 64

6. कबीर: हजारी प्रसाद द्विवेदी, पृ. 239

7. भक्ति आंदोलन और भक्ति काव्य: शिवकुमार मिश्र, अभिव्यक्ति प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ. 47

8. भक्ति आंदोलन और सूरदास का काव्य: मैनेजर पाण्डेय, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, पृ. 33

9. कबीर: हजारी प्रसाद द्विवेदी, पृ. 209

10. कबीर ग्रंथावली: कमलापति पांडेय, पृ. 430

11. कबीर: हजारी प्रसाद द्विवेदी, पृ. 209

12. हिन्दी साहित्य का इतिहास: आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, पृ. 65

13. भक्ति आंदोलन और भक्ति काव्य: शिवकुमार मिश्र, लोकभारती प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 78

14. कबीर एक नई दृष्टि: डाॅ. रघुवंश, पृ. 110

15. कबीर साहित्य और सिद्धान्तः यज्ञदत्त शर्मा, पृ. 120

16. वही, पृ. 25

17. वही, पृ. 113

18. कबीर ग्रन्थावली: (सं.) श्यामसुन्दर दास, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, पृ. 100

19. कबीर ग्रन्थावली: (सं.) श्यामसुन्दर दास, इंडियन प्रेस लिमिटेड, प्रयास, पृ. 207

20. कबीर साहित्य और सिद्धान्तः यज्ञदत्त शर्मा, पृ. 128